इकाई 27 विजयनगर साम्राज्य

इकाई की रूपरेखा

27.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप निम्नलिखित बातों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे :

- विजयनगर साम्राज्य का उद्भव,
- 14वीं-16वीं सदियों के मध्य विजयनगर की शक्ति का प्रसार,
- बहमनी शासकों और सुदूर दक्षिण के साथ विजयनगर के सबंध,
- साम्राज्य को मजबूत बनाने और उसके पतन की प्रक्रिया, और
- प्रशासनिक व्यवस्था, नायनकार और आयगार व्यवस्था के विशेष संदर्भ सहित आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था।

27.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम दक्षिण भारत के वृहत्तर-भू-भाग में विजयनगर साम्राज्य के आविर्भाव, विस्तार और विकास के साथ-साथ उसके विघटन का अध्ययन करेंगे।

पिछली इकाई में आप दक्षिण भारतीय वृहत्तर-भू-भाग में चालुक्य और चोल साम्राज्यों के पतन के फलस्वरूप चार राज्यों के आविर्भाव के बारे में अध्ययन कर चुके हैं। दक्षिण में पांड्य और होयसल जबकि उत्तर में काकतीय और यादव राज्यों का उत्कर्ष हुआ। दिल्ली के सुल्तानों द्वारा दक्खन एवं दक्षिण भारत पर आक्रमणों से इन राज्यों की शक्ति क्षीण हुई और

वे दिल्ली सल्तनत के अधीन हो गए। इसके बाद 14वीं शताब्दी के दूसरे चतुर्थांश में बहमनी और विजयनगर राज्यों का आविर्भाव एवं प्रसार हुआ। हरिहर और बुक्का (अंतिम यादव राजा संगमा के पुत्र) वारंगल के काकतीयों के अधीन सेवारत थे। दिल्ली सुल्तानों के हाथों वारंगल की पराजय के बाद वे काम्पिली चले गए। सल्तनत द्वारा काम्पिली को अपने अधीन करने के बाद दोनों भाइयों को दिल्ली ले जाया गया, जहाँ वे इस्लाम स्वीकार कर सुल्तान के कृपापात्र बने। शीघ्र ही होयसलों ने स्थानीय लोगों की मदद से काम्पिली पर आक्रमण किया और दिल्ली के राज्यपाल को पराजित किया। इस संकट के समय में सुल्तान ने हरिहर और बुक्का को इस क्षेत्र के शासन हेतु भेजा। उन्होंने सुल्तान की शक्ति की पुनः स्थापना प्रारंभ की, किन्तु विद्यारान्या के संपर्क में आ पुनः हिंदू धर्म ग्रहण किया। उन्होंने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर 1336 में विजयनगर राज्य की स्थापना की, जिसका राजा हरिहर बना। शीघ्र ही यह राज्य एक शक्तिशाली विजयनगर साम्राज्य के रूप में विकसित हुआ।

27.2 स्थापना और दृढ़ीकरण

उपभाग 8.2.4 में आप पहले ही अध्ययन कर चुके हैं कि दक्षिण भारत के राजनीतिक घटनाक्रम के निर्धारण में भौगोलिक समाकृतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्थानीय शक्तियों के मध्य संघर्ष के मुख्य केन्द्र थे कृष्णा-गोदावरी डेल्टा, कावेरी घाटी, तुंगभद्रा दोआब और कोंकण भू-भाग जो अपनी उर्वरता एवं दूर फैले गहरे सागरों तक पहुंच के लिए जाना जाता था। 8वीं-13वीं शताब्दी के मध्य संघर्ष राष्ट्रकूटों और पल्लवों के मध्य था, जबकि बाद में टकराव विजयनगर और बहमनी राज्यों के बीच था। बहमनी शासकों ने विजयनगर शासकों को अपनी शक्ति के प्रमुख केन्द्र तुंगभद्रा से प्रायद्वीप के पार पूर्व और पश्चिम की ओर विस्तार करने के लिए विवश किया। शुरू में विजयनगर शासकों को रायचूर और तुंगभद्रा दोआब में बहमनी शक्ति को दबाने में मुश्किल उठानी पड़ी क्योंकि बहमनी शासकों की वारंगल स्थित राजाकोन्डा के वेलामाओं के साथ संधि थी। इन परिस्थितियों ने विजयनगर को उत्तर की ओर बढ़ने से रोका एवं उसे दक्षिण में तमिल-क्षेत्र तथा प्रायद्वीप के पार पूर्व और पश्चिम में विस्तार के लिए विवश किया। किन्तु बाद में यह गठबंधन टूट गया जिसका लाभ विजयनगर साम्राज्य को मिला।

27.2.1 प्रारंभिक काल 1336-1509

इस काल में विजयनगर, बहमनी, कोण्डाविडु (ऊपरी कृष्णा-गोदावरी डेल्टा विस्तार) के रेड्डियों, राजाकोण्डा, (कृष्णा-गोदावरी डेल्टा के निचले विस्तारों) के वेलामाओं, तेलुगु-चोडाओं (कृष्णा-गोदावरी क्षेत्र के मध्य) और उड़ीसा के गजपतियों के मध्य कृष्णा-गोदावरी डेल्टा, तुंगभद्रा दोआब और मराठवाड़ा (विशेषतः कोंकण) के नियंत्रण को लेकर संघर्ष होते रहे।

इन निरंतर संघर्षों के कारण विजयनगर की सीमाएं परिवर्तित होती रहीं। 1336-1422 के मध्य मुख्य संघर्ष विजयनगर एवं बहमनी शासकों के मध्य हुए जिसमें तेलुगु-चोडा सरदारों ने बहमनी शासकों का और राजाकोण्डा के वेलामाओं एवं राजामुन्द्री के रेड्डियों ने विजयनगर का साथ दिया। इसके फलस्वरूप विजयनगर का पलड़ा भारी रहा।

1422-46 के दौरान रायचूर दोआब के अधिग्रहण को लेकर विजयनगर और बहमनी शासकों के मध्य संघर्ष छिड़ा जिसमें विजयनगर की हार हुई। इसने विजयनगर सेना की कमियों को पूरी तरह से उजागर किया। इसने शासकों को मुस्लिम तीरंदाज़ों तथा अच्छी नस्ल वाले घोड़ों को अपनी सेना में शामिल करने तथा उसके पुनर्गठन के लिए विवश किया। मुस्लिम तीरंदाज़ों को राजस्व अनुदान भी दिए गए। इस काल में संपूर्ण कोण्डाविडु क्षेत्र का समामेलन विजयनगर साम्राज्य में हुआ।

1465-1509 के मध्य एक बार फिर रायचूर दोआब संघर्षों का केन्द्र बना। प्रारंभ में विजयनगर को अपने पश्चिमी बंदरगाहों, यथा : गोवा, चौल और दभोल बहमनी शासकों को समर्पित करने पड़े। परन्तु, 1490 के आसपास यूसुफ आदिल खां के नेतृत्व में बीजापुर की स्थापना के बाद बहमनी राज्य में आंतरिक विघटन की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए विजयनगर ने तुंगभद्रा क्षेत्र (अदोनी एवं कुरनूल) पर कब्जा करने में सफलता पाई। इससे पहले पश्चिमी बंदरगाहों के हाथ से निकल जाने से अरबों के साथ अश्व-व्यापार अव्यवस्थित हो चुका था, जो विजयनगर की घुड़सवार सेना के लिए महत्वपूर्ण था। तथापि,

होनावर, भतकल, बकानूर एवं मंगलौर बंदरगाहों को हासिल करने के बाद अश्व-व्यापार पुनः प्रारंभ हुआ। इसके फलस्वरूप घोड़ों की निरंतर आपूर्ति से विजयनगर सेना की कार्यक्षमता को बल मिला।

पूर्व में उड़ीसा के गजपति एक प्रमुख शक्ति थे। उनके अधिकार-क्षेत्र में कोण्डाविडु, उदयगीर और मसूलीपट्टभ आते थे। विजयनगर शासकों ने गजपतियों को गोदावरी तक खदेड़ कर कोण्डाविडु, उदयगीर एवं मसूलीपट्टम पर अधिकार जमाया। परंतु शीघ्र ही, 1481 में, बहमनियों द्वारा मसूलीपट्टम हथिया लिया गया। विजयनगर को उदयगीर, उम्मातुर (मैसूर के समीप) एवं सेरिंगपट्टम के सरदारों के निरंतर विद्रोहों का भी सामना करना पड़ता था।

27.2.2 कृष्णदेव राय 1509-29

यह काल विजयनगर के महानतम शासक कृष्णदेव राय (1509-29) की उपलब्धियों का है। इस अवधि में बहमनी शक्ति का पतन हुआ, जिसके फलस्वरूप 5 राज्यों का उद्भव हुआ : अहमदनगर में निज़ामशाही; बीजापुर में आदिल शाही; बरार में इमद शाही, गोलकोण्डा में कुतब शाही; और बीदर में बरीद शाही। बहमनी सल्तनत के विघटन की ओर अग्रसर होने के कारण कृष्णदेव राय को बीजापुर के आदिल शाहियों से कोविलकोण्डा और रायचूर तथा बहमानी शासको से गुलबर्गा एवं बीदर प्राप्त करने में सफलता मिली। कृष्णदेव राय ने गजपतियों से उदयगीर, कोण्डाविडु (कृष्णा नदी के दक्षिण में), नालगोण्डा (आन्ध्रप्रदेश), तेलँगाना, राजामुन्द्री एवं वारंगल पुनः प्राप्त किए।

दक्षिण भारत
विजयनगर साम्राज्य के दौरान
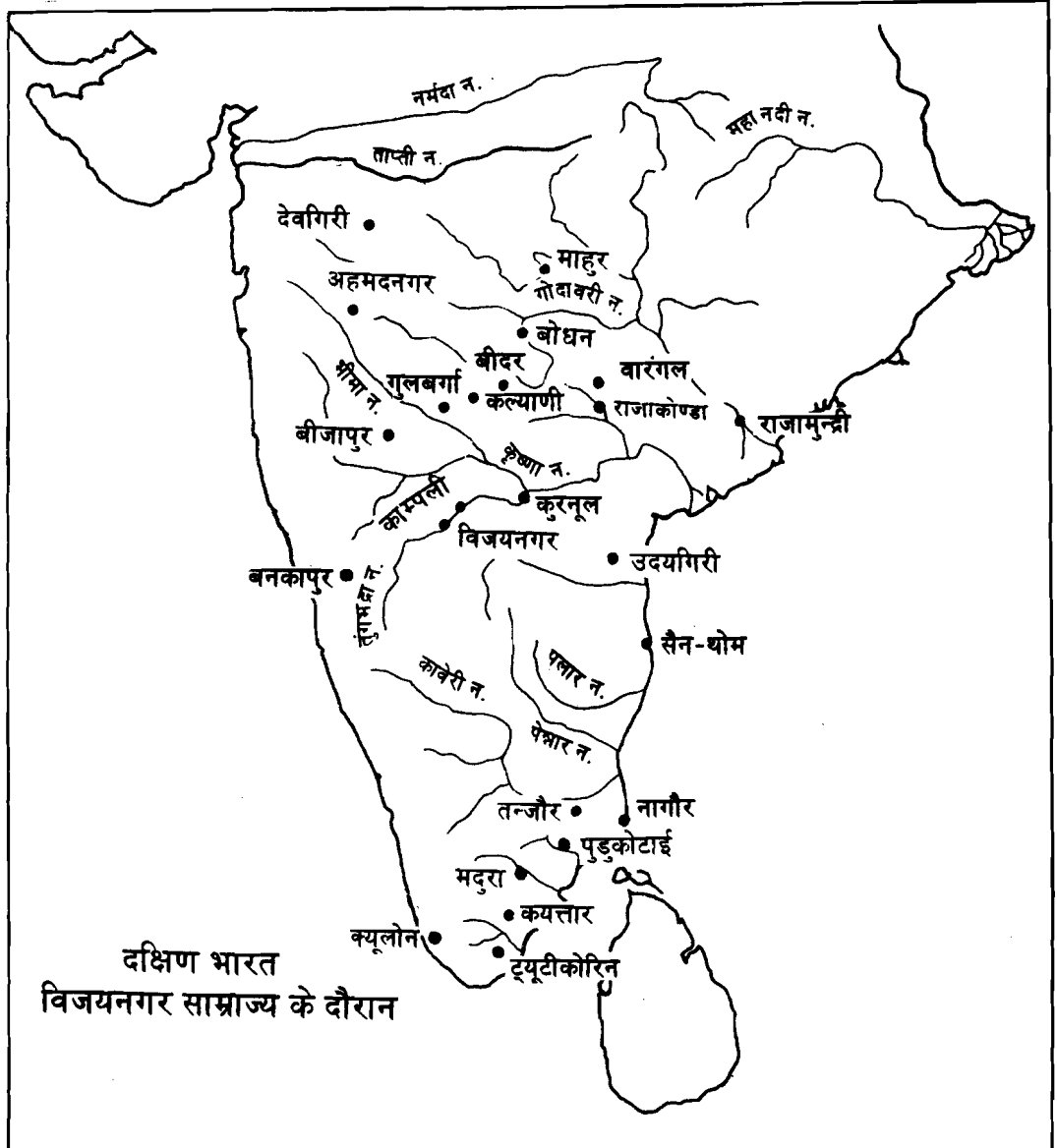
1510 से पुर्तगाली भारत में एक प्रमुख नौसैनिक शक्ति के रूप में सामने आए। गोवा और साथ ही डाण्डा राजौरी एवं दभोल पर अधिकार कर उन्होंने अश्व-व्यापार पर एकाधिकार जमाया, क्योंकि गोआ दक्खनी राज्यों में अश्व-व्यापार का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था। कृष्णदेव राय ने पुर्तगालियों के साथ मित्रता के संबंध बनाए रखे। अलबुकर्क की प्रार्थना पर कृष्णदेव राय ने उन्हें भतकल में दुर्ग-निर्माण की स्वीकृति दी। इसी तरह, पुर्तगाली सैनिकों ने कृष्णदेव राय की बीजापुर के इस्माइल आदिल खान के विरुद्ध जीत में पर्याप्त योगदान दिया।

27.2.3 अस्थिरता का युग 1529-42

कृष्णदेव राय की मृत्यु के साथ ही आंतरिक संघर्ष एवं बाहरी आक्रमण प्रारंभ हुए। आंतरिक स्थिति का लाभ उठाते हुए बीजापुर के इस्माइल आदिल खां ने रायचूर और मुद्गल पर कब्जा कर लिया। गजपतियों और गोलकोण्डा राजाओं ने भी कोण्डाविडु को प्राप्त करने के लिए असफल प्रयास किए। इस गड़बड़ी का फायदा उठाते हुए कृष्णदेव राय के भाई अच्युत राय (1529-42) ने विजयनगर सिंहासन हथियाने में सफलता पाई। परन्तु उसकी मृत्यु के बाद पुनः उत्तराधिकार को लेकर अच्युत राय के पुत्र और उसके भतीजे सदाशिव के बीच संघर्ष छिड़ा। सदाशिव ने 1542 में सिंहासन प्राप्त किया। लेकिन वास्तविक शक्ति कृष्णदेव राय के दामाद राम राय के हाथों में ही रही।

सदाशिव ने मुसलमानों को सेना में प्रवेश देने की नीति [illegible] दिए, जिससे सेना की कार्य-कुशलता में वृद्धि हुई।

27.2.4 पुर्तगाली

राम राय के पुर्तगालियों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध नही थे। 1542 में मार्टिम अल्फांसो डिसूजा गोवा का राज्यपाल बना तथा उसने भतकल में लूटपाट की। बाद में, राम राय को अल्फांसो डिसूजा के उत्तराधिकारी जोआओ दे केस्ट्रो के साथ 1547 में एक संधि करने में सफलता मिली, जिसमें राम राय ने अश्व-व्यापार के एकाधिकार प्राप्त किए। राम राय ने पुर्तगालियों के प्रभाव क्षेत्र, कोरोमण्डल स्थित सेन थोम में उनके प्रभाव को नियंत्रित करने की कोशिश की।

27.2.5 सुदूर दक्षिण के साथ विजयनगर के संबंध

1512 तक, विजयनगर शासकों ने लगभग संपूर्ण दक्षिणी प्रायद्वीप को अपने अधिकार में ले लिया। राजागंबीर-राज्यन् (तोंडईमंडलम्) नामक छोटे-से हिन्दू राज्य, कालीकट के जमोरिन और क्विलोन (केरल) के शासकों ने विजयनगर का आधिपत्य स्वीकार किया। 1496 तक लगभग संपूर्ण सुदूर दक्षिण केप कोमोरिन तक के क्षेत्र जिसमें स्थानीय चोल, चेरा शासक के क्षेत्र आते थे, तंजौर, पुडुकोट्टाई तथा मदुरा के मानाभूषा भी आते थे, विजयनगर के अधीनस्थ हो गए। किन्तु पाण्ड्य शासक (टयूटीकोरिन तथा कयत्तर का सरदार) को गौण राजा के रूप में शासन करने दिया गया। तमिल प्रदेश के आधिपत्य का एक रोचक पहलू यह था कि जीत के बाद तेलुगु सैनिक उस दूरस्थ तथा विरल जनसंख्या वाले प्रदेश में स्थायी तौर पर बस गए। इन प्रवासियों ने वहाँ की काली मिट्टी का भरपूर फायदा उठाया एवं कालांतर में **रेड्डियों** के एक महत्वपूर्ण खेतिहर वर्ग का आविर्भाव हुआ। साथ ही, तमिल प्रदेश में **नायकों** का बिचौलियों के रूप में उद्भव भी तमिल क्षेत्र में प्रसार का ही परिणाम था।

विजयनगर राज्य एक वृहत राजनीतिक व्यवस्था थी, जिसके अंतर्गत विभिन्न लोग आते थे जैसे तमिल, कन्नड और तेलुगु भाषी समुदाय।

विजयनगर शासकों की तुंगभद्रा प्रदेश पर प्रत्यक्ष प्रादेशिक सम्प्रभुता थी। दूसरे स्थानों पर, विजयनगर शासकों ने तेलुगु योद्धाओं (**नायकों**) और उन स्थानीय सरदारों जो **नायकों** के रूप में कार्यांतरित हो चुके थे और उन सम्प्रदायी वर्गों जैसे वैष्णवों (उनकी राजनीति भूमिका के बारे में आप अगले भाग में पढ़ेंगे) द्वारा आनुष्ठानिक सम्प्रभुता स्थापित की।

27.2.6 दक्खन के मुस्लिम राज्य

आप पहले ही पढ़ चुके हैं कि 1538 तक बहमनी राज्य 5 प्रदेशों में विभाजित हुआ—बीजापुर, गोलकोण्डा, अहमदनगर, बीदर और बरार। 1542-43 में बीजापुर और गोलकोण्डा के मध्य आपसी समझ से बीजापुर को विजयनगर के विरुद्ध खुली छूट मिल गई, जबकि अहमदनगर ने बीदर की कीमत पर विस्तार की योजना बनाई। इस समझौते के साथ इब्राहीम आदिल शाह ने विजयनगर पर आक्रमण किया किंतु उसका दो टूक जवाब मिला। लेकिन यह समझ भी लंबे समय तक जारी न रह सकी। अहमदनगर ने बीदर के कल्याणी के

दुर्ग को हासिल करने में राम राय की सहायता प्राप्त की। राम राय के दक्खन राज्यों के साथ संबंध बहुत जटिल थे, बीदर के विरुद्ध उसने अहमदनगर की सहायता की परंतु जब अहमदनगर ने गुलबर्गा (जो कि बीजापुरी क्षेत्र था) पर आक्रमण किया, राम राय ने बीजापुर शासक का पक्ष लिया। राम राय ने विजयनगर और दक्खनी राज्यों के मध्य एक सामूहिक सुरक्षा योजना बनाने में सफलता प्राप्त की। यह स्वीकार किया गया कि किसी एक के विरुद्ध आक्रमण की स्थिति में आक्रमणकारी के विरुद्ध अन्य सभी सशस्त्र संघर्ष करने को बाध्य होंगे।

इस समझौते का खुला उल्लंघन करते हुए 1560 में अहमदनगर ने बीजापुर पर आक्रमण किया। राम राय को अहमदनगर के विरुद्ध गोलकोण्डा की सहायता मिली, परंतु यह समझौता भी शीघ्र समाप्त हो गया। अहमदनगर पराजित हुआ और कल्याणी बीजापुर को समर्पित किया गया। इसी समय, राम राय ने भी बीदर पर आक्रमण कर सुरक्षा समझौते का उल्लंघन किया। गोलकोण्डा के शासक ने अहमदनगर के साथ मिलकर कल्याणी पर आक्रमण किया। राम राय ने अपनी सेना कल्याणी के दुर्ग को हथियाने के लिए गोलकोण्डा के विरुद्ध भेजी। दूसरी तरफ, विजयनगर और बीजापुर ने मिलकर (जो पुनः एक अस्थायी मिलन था) अहमदनगर और गोलकोण्डा, के आक्रमण का सामना किया। अंत में, अहमदनगर को अपने कोविलकोण्डा, गनपुरा और पंगल के किले देने पड़े। इस दौरान राम राय की नीति एक मुस्लिम राज्य को दूसरे से लड़ाकर विजयनगर के पक्ष में शक्ति-संतुलन को बनाए रखना था। बाद में गोलकोण्डा, अहमदनगर, बीदर और बीजापुर ने सम्मिलित होकर विजयनगर के विरुद्ध मोर्चा बनाया। यह युद्ध कृष्णा नदी के निकट स्थित तालिकोटा नामक कस्बे में (1565) हुआ। विजयनगर पर इसका विनाशकारी प्रभाव पड़ा। राम राय मारा गया। यद्यपि, विजयनगर राज्य लगभग सौ और वर्षों तक अस्तित्व में रहा, इसका क्षेत्रफल घट चुका था और रायों की दक्षिण भारत की राजनीति में कोई महत्ता नहीं रही।

बोध प्रश्न 1

1) कृष्णा-गोदावरी डेल्टा, तुंगभद्रा दोआब और कोंकण के नियंत्रण को लेकर विजयनगर और बहमनी राज्यों के मध्य संघर्ष का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) 50 शब्दों में पुर्तगालियों और विजयनगर के शासकों के संबंधों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

3) दक्खनी मुस्लिम राज्यों के साथ संघर्षों के कारण अंततः विजयनगर के भाग्य का सूर्यास्त हो गया। टिप्पणी कीजिए।

....

....

....

....

....

....

27.3 धर्म और राजनीति

धर्म और धार्मिक वर्गों की विजयनगर साम्राज्य के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका थी।

27.3.1 प्रतीकात्मक राजत्व

सामान्य तौर पर यह कहा जाता है कि धर्म की कठोर पालना का सिद्धांत विजयनगर साम्राज्य का एक प्रमुख अवयव एवं विशिष्ट लक्षण था। लेकिन, अधिकतर विजयनगर के शासकों को हिन्दू शासकों से भी युद्ध करना पड़ता था, जैसे उड़ीसा के गजपति। विजयनगर की सेना में रणनीति के दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण दस्ते मुस्लिम सेनानायकों के अधीन होते थे। देवराया II द्वारा मुस्लिम तीरंदाज़ों को भर्ती किया गया। इन मुस्लिम टुकड़ियों ने विजयनगर के हिन्दू प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध विजयनगर की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विजयनगर शासकों ने सफल सैनिक कार्यवाहियों के फलस्वरूप **दिग्विजयन** की पदवी धारण की। विजयनगर का राजत्व एक प्रकार से प्रतीकात्मक था, क्योंकि विजयनगर के शासक अपनी सत्ता के प्रमुख केंद्र से परे भू-भागों पर अपने अधिपतियों द्वारा नियंत्रण करते थे। इस प्रतीकात्मकता का निरूपण धर्म के साधन द्वारा होता था, जो लोगों द्वारा स्वामिभक्ति निश्चित करता था। उदाहरण के तौर पर प्रतीकात्मक राजत्व का महानवमी के उत्सव में सबसे अच्छा दृष्टान्त मिलता है। यह एक वार्षिक राजकीय समारोह था, जो 15 सितम्बर और 15 अक्तूबर के मध्य नौ दिन तक चलता था। इसकी समाप्ति दसवें दिन दशहरा के उत्सव में होती थी। प्रादेशिक क्षेत्रों के महत्वपूर्ण व्यक्ति (जैसे सेनानायक) इस उत्सव में भाग लेते थे। इस उत्सव द्वारा साम्राज्य के प्रादेशिक भागों पर विजयनगर के शासकों की सम्प्रभुता की मान्यता को बल मिलता था। यद्यपि ब्राह्मण इस उत्सव में भाग लेते थे, उनकी भूमिका प्रमुख नहीं होती थी। उत्सव के आनुष्ठानिक कृत्यों का निष्पादन स्वयं राजा द्वारा किया जाता था।

27.3.2 ब्राह्मणों की राजनीतिक भूमिका

विजयनगर साम्राज्य का एक विशिष्ट लक्षण ब्राह्मणों का राजनैतिक एवं धर्म-निरपेक्ष कार्यकर्ताओं न कि धार्मिक मुखियाओं के रूप में महत्व था। अधिकतर **दुर्ग दाननायक** (दुर्ग-प्रभारी) ब्राह्मण होते थे। साहित्यिक स्रोत इस बात की पुष्टि करते हैं कि उस युग में दुर्गों का बहुत महत्व था और उनका नियंत्रण ब्राह्मणों, विशेषतः तेलुगु मूल के, द्वारा किया जाता था।

इस काल में अधिकतर शिक्षित ब्राह्मण प्रशासक व लेखाकार के रूप में राजकीय कर्मचारी बनना चाहते थे, जहाँ उनके लिए उज्ज्वल जीविकोपार्जन के साधनों की संभावनाएं थीं। शाही सचिवालय पूर्ण रूप से ब्राह्मणों द्वारा संचालित थे। ये ब्राह्मण अन्य ब्राह्मणों से भिन्न थे : ये तेलुगु **नियोगी** नामक उपजाति से संबंधित थे। वे धार्मिक कृत्यों को लेकर बहुत पुरातनपंथी नहीं थे। ब्राह्मण प्रभावशाली ढंग से राजा के लिए प्रजा की दृष्टि में वैधता स्थापित करने का कार्य करते थे। विद्यारन्या नाम के ब्राह्मण और उसके परिजन संगमा-बंधुओं के मंत्री थे : उन्होंने उनको पुनः हिन्दू धर्म में स्वीकार कर उनके शासन को वैधता प्रदान की।

ब्राह्मणों ने सेनापतियों के रूप में विजयनगर की सेना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उदाहरण के तौर पर कृष्णदेव राय के काल में ब्राह्मण सलुव टिम्मा को आर्थिक सहायता प्रदान की गई क्योंकि वह राजनीतिक व्यवस्था का एक अंगीभूत अंग था। इन ब्राह्मणों का कार्य साम्राज्य के विभिन्न भागों में दुर्गों का निर्माण और देख-रेख करना होता था, जिसके लिए उन्हें कुछ शाही गांवों (**भंडारावाडा**) का राजस्व प्राप्त होता था। शाही गांवों और अमरम गांवों (जिनकी आय स्थानीय सैनिक मुखियाओं के अधीन थी) में विभेदन किया गया।

27.3.3 राजाओं, सम्प्रदायों और मंदिरों के मध्य संबंध

दूरस्थ तमिल भू-भाग पर प्रभावी नियंत्रण हेतु विजयनगर के शासकों ने तमिल क्षेत्र के वैष्णव संप्रदायी मुखियाओं का सहयोग लिया। तमिल प्रदेश में अजनबी होने से विजयनगर के शासकों के लिए अपनी शक्ति को वैधता प्रदान करने हेतु मूलभूत तमिल धार्मिक संगठनों जैसे मंदिरों के साथ संबंध स्थापित करना आवश्यक हो गया।

राजाओं, संप्रदायों और मंदिरों के मध्य संबंधों की निम्नलिखित चार बिंदुओं के आधार पर व्याख्या की जा सकती है :

1) राजत्व को बनाए रखने के लिए मंदिर आधारभूत थे।
2) संप्रदायी मुखिया राजाओं और मंदिरों के मध्य एक कड़ी का कार्य करते थे।
3) यद्यपि मंदिरों की सामान्य देख-रेख स्थानीय संप्रदायी वर्गों द्वारा की जाती थी, मंदिरों संबंधी विवादों को सुलझाने का कार्य राजा के हाथों में था।
4) ऐसे विवादों में राजा का हस्तक्षेप वैधानिक न होकर, प्रशासनिक होता था।

1350-1650 के मध्य दक्षिण भारत में कई मंदिरों का निर्माण हुआ। भौतिक संपत्ति (निश्चित गांवों के कृषि उत्पादन का एक हिस्सा) के रूप में मंदिरों को प्राप्त होने वाले अनुदानों और उपहारों के फलस्वरूप विजयनगर राज्य के अधीन एक विशेष कृषि-अर्थव्यवस्था ने जन्म लिया। (इसका अध्ययन अर्थव्यवस्था के भाग में किया जाएगा।)

संगमावंश के आरंभिक शासक शैव थे, जिन्होंने विजयनगर के विरूपक्क्षा (पम्पापति) के मंदिर का पुन:निर्माण किया। सलूव मुख्यतया वैष्णव थे, जिन्होंने शैव और वैष्णव दोनों ही मंदिरों को संरक्षण दिया। कृष्णदेव राय (तुलूव शासक) ने कृष्णास्वामी मंदिर (वैष्णव मंदिर) का निर्माण किया और शिव मंदिरों को भी अनुदान दिया। अराविडु राजाओं ने भी वैष्णव मंदिरों को उपहार प्रदान किए।

27.4 स्थानीय प्रशासन

आप खंड 3 में इस युग से पहले की स्थानीय संस्थाओं (जैसे **सभा, नाडु** और **उर**) के बारे में पढ़ चुके हैं। परवर्ती चोलों के समय में प्रादेशिक सभा (**नाडु**) और साथ ही गांव सभाओं (**सभा** और **उर**) की शक्ति कमजोर हो गई थी। विजयनगर साम्राज्य के काल में **नायक** और **आयगार** व्यवस्था की प्रमुखता के बावजूद ये संस्थाएं पूर्ण रूप से लुप्त नहीं हुईं।

27.4.1 नायनकार व्यवस्था

नायनकार व्यवस्था विजयनगर के राजनैतिक संगठन की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। सेनानायक और योद्धा **नायक** या **अमरनायक** की पदवी धारण किया करते थे। इन योद्धाओं को इनकी जातीय पहचान, कर्तव्यों या अधिकारों और विशेषाधिकारों के आधार पर वर्गीकृत करना कठिन है।

नायक संस्था का गहन अध्ययन दो पुर्तगाली विद्वानों फरनाओ नूनिज़ और डोमेन्गो पाएस द्वारा किया गया जिन्होंने 16वीं शताब्दी में तुलूव वंश के कृष्णदेव राय और अच्युत राय के राज्य-काल में भारत की यात्रा की थी। उन्होंने **नायकों** को महज रायों (केंद्रीय सरकार) के एजेंट के रूप में देखा। नूनिज़ द्वारा वर्णित **नायकों** द्वारा रायों को दी जाने वाली अदायगी, के प्रमाण से सामंती दायित्वों का प्रश्न सामने आता है। विजयनगर के अभिलेख और बाद में मेकेन्जी की पांडुलिपियां **नायकों** का प्रादेशिक **नायकों** के रूप में चित्रण करते हैं, जिनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं कई बार शासकों के उद्देश्यों के विपरीत टकराती थीं।
एन.के. शास्त्री (1946 में) ने 1565 के पूर्व और उसके बाद के **नायकों** के मध्य एक विभाजन-रेखा खींची है। पहले वे पूर्ण रूप से शासकों पर निर्भर थे, जबकि बाद में ये **नायक** अर्द्ध-स्वतंत्र हो गए थे। किंतु, बाद में उन्होंने अपनी राय में संशोधन करते हुए 1565 के पूर्व **नायकों** को सैनिक-मुखिया बताया जिनके अधीन सैनिक जागीरें होती थीं। एक नवीनतम कृति में (**सोरसेज़ ऑफ इंडियन हिस्ट्री**) उन्होंने विजयनगर साम्राज्य को एक सैनिक महासंघ बताया जिसमें कई सरदार मिलकर उनमें से सर्वाधिक शक्तिशाली के नेतृत्व में सहयोग करते थे। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि इस्लाम के बढ़ते खतरे को देखते हुए विजयनगर शासकों को सैन्य-शक्ति और धर्म पर महत्व देना पड़ा। कृष्णास्वामी **नायक** व्यवस्था को सामंती मानते हैं। परंतु वेंकटरमन्या का कहना है कि **नायक** व्यवस्था में यूरोपीय सामंतवाद के प्रमुख लक्षण जैसे स्वामिभक्ति, सम्मान और उप-सामंतीकरण अनुपस्थित थे। इसी तरह डी.सी. सरकार इस सिद्धांत का खंडन करते हुए इसकी सामंतवाद के एक रूपांतर के रूप में इसकी एक प्रकार की जमींदार प्रथा के रूप में व्याख्या करते हैं, जिसमें राजा हेतु सैनिक सेवाओं के लिए **अमरनायकों** को भूमि बांटी जाती थी।

इसी प्रकार, डी.सी. सरकार और टी.वी. महालिंगम विजयनगर के **नायकों** को योद्धाओं के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिन्हें केंद्रीय सरकार द्वारा सैनिक सेवा के बदले पद (**कर**) दिया जाता

था। **अमरनायक** उस सैन्य अधिकारी को कहा जाता था, जिसके अधीन निश्चित संख्या में सैन्य टुकड़ियां रहती थीं। इन **नायकों** को भूमि या क्षेत्र में राजस्व अधिकार प्राप्त थे, जो **अमरम (अमरमकरा या अमरामहाली)** कहलाते थे। तमिल-प्रदेश और विजयनगर साम्राज्य में भूमि का लगभग 3/4 भाग इसके अंतर्गत आता था। **नायकों** की जिम्मेदारियां और गतिविधियों में से कुछ इस प्रकार थीं : मंदिरों को उपहार देना, तालाबों का निर्माण, उजाड़ भूमि को फिर से उपजाऊ बनाना और मंदिरों से शुल्क वसूल करना। तथापि, तमिल अभिलेख राजा या उसके अधिकारियों को **नायकों** द्वारा भुगतान का उल्लेख नहीं करते हैं।

मेकेन्जी की पांडुलिपियों के आधार पर कृष्णास्वामी का मानना है कि विजयनगर के सेनापतियों (पहले कृष्णदेव राय के अधीन) ने कालांतर में स्वतंत्र **नायक** राज्यों की स्थापना की। इन खतरों से बचने के लिए विजयनगर सम्राटों ने सामुद्रिक व्यापार पर अधिक नियंत्रण का प्रयास किया, जो घोड़ों की खरीद-फरोख्त के लिए महत्वपूर्ण था। उन्होंने अच्छी नस्ल के घोड़ों के लिए उच्च दाम देकर इस व्यापार पर अपना एकाधिकार स्थापित करना चाहा। उन्होंने वफादार सैनिकों की सुरक्षित सुरक्षा सेनाएं बनायीं। इस प्रकार, जहाँ एक तरफ तेलुगु **नायक** विजयनगर साम्राज्य की शक्ति के स्रोत थे, वहीं दूसरी ओर वे इसके प्रतिद्वंद्वी भी थे।

27.4.2 आयगार व्यवस्था

इसका पहले ही संकेत दिया जा चुका है कि विजयनगर युग में स्वायत्त स्थानीय संस्थाओं को विशेषतः तमिल भाग में, आघात पहुंचा। विजयनगर काल से पहले कर्नाटक तथा आंध्र में स्थानीय संस्थाओं के पास तमिल क्षेत्र की अपेक्षा कम स्वायत्तता थी। विजयनगर काल में कर्नाटक में स्थानीय क्षेत्रीय विभाजन बदल दिए गए। फिर भी, **आयगार** व्यवस्था जारी रही और संपूर्ण वृहतर क्षेत्र में व्यापक रूप से प्रचलित थी। 15-16वीं शताब्दी के मध्य **नाडु** और **नट्टार** की क्षीण होती शक्ति के फलस्वरूप तमिल प्रदेश में इसका विस्तार हुआ। **आयगार** ग्राम्य सेवक अथवा कर्मचारी होते थे, तथा इसके अंतर्गत परिवारों के समूह आते थे। ये थे—मुखियागण (**रेड्डी** और **गौडा, मनियम**), लेखाकार (**करनम सेनभोवा**) और पहरेदार (**तलाईयारी**)। इन्हें गांव का एक भाग या गांव में एक भूखंड दे दिया जाता था। कभी-कभी उन्हें एक निश्चित लगान अदा करना पड़ता था, किंतु सामान्यतया ये भूखंड **मान्या** अर्थात् कर-मुक्त होते थे, क्योंकि उनकी कृषिय आय पर कोई नियमित कर नहीं लगाया जाता था। कुछ विशेष स्थितियों में ग्राम्य कर्मचारियों को नकद के रूप में उनकी सेवा के लिए सीधा भुगतान किया जाता था। अन्य ग्राम्य-सेवकों जैसे धोबी या पुजारी को भी आनुष्ठानिक कार्यों और गांव के समुदायों की सेवा के लिए भुगतान भूमि के रूप में किया जाता था। अन्य सामान्य सेवाएं देने वाले ग्राम्य सेवकों में चमड़ा-कारीगर, जिनके बनाए चमड़े के थैले सिंचाई के साधनों (**कपिला** या **मोहते**) में उपयोगी थे, कुम्हार, लुहार, बढ़ई, जलापूर्ति कारक व्यक्ति (**निरनिक्कर** : जो सिंचाई-मार्गों की देख-रेख करता था और साहूकारों, महाजनों का पर्यवेक्षक था) थे। आयगार व्यवस्था की विशिष्टता यह थी कि भूमि द्वारा आय का विशेष आवंटन तथा निश्चित नकद भुगतान पहली बार ग्राम्य सेवकों (जिनका निश्चिय कार्य था)को किया गया।

बोध प्रश्न 2

1) दस पंक्तियों में विजयनगर साम्राज्य में ब्राह्मणों की भूमिका और कार्यों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

2) निम्नलिखित को परिभाषित कीजिए :

अमरम

....

....

भंडारावाडा

....

....

दुर्ग दाननायक

....

....

आयगार

....

....

3) दस पंक्तियों में **नायनकार** व्यवस्था की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

27.5 अर्थव्यवस्था

इस भाग में हम विभिन्न भूमि एवं आय संबंधी अधिकारों तथा मंदिरों की आर्थिक भूमिका का अध्ययन करेंगे। हम विदेशी और आंतरिक व्यापार के पहलुओं तथा नगरीय जीवन का अध्ययन भी करेंगे।

27.5.1 भूमि एवं आय संबंधी अधिकार

चावल मुख्य पैदावार थी। कोरोमण्डल से लेकर पूलिकट तक काले और श्वेत दोनों किस्म के चावल उगाए जाते थे। इसके अलावा, दालों और चनों जैसे खाद्यान्न उगाए जाते थे। अन्य महत्वपूर्ण उत्पादों में गर्म मसाले (विशेषतः काली मिर्च), नारियल और सुपारियां थीं। भू-राजस्व राज्यों की आय का मुख्य साधन था। राजस्व निर्धारण की दर साम्राज्य के विभिन्न भागों में और एक ही स्थान पर भूमि की उर्वरता और उसकी क्षेत्रीय अवस्थिति के आधार पर भिन्न-भिन्न थी। सामान्य तौर पर यह आय का 1/6 भाग थी, परंतु कुछ मामलों में यह अधिक, 1/4 भाग तक थी। ब्राह्मणों और मंदिरों पर यह क्रमशः 1/20 भाग और 1/30 भाग थी। इसका भुगतान नकद और वस्तुओं दोनों के रूप में किया जाता था। हमें भूमि-काश्तकारी के तीन मुख्य वर्गों का संदर्भ मिलता है: **आमरा, भंडारावाडा** और **मान्या**। ये गांवों की आय के विभाजन को प्रदर्शित करते हैं। **भंडारावाडा** राजा के अधीनस्थ गांव थे, यह वर्ग सबसे छोटा था। इसकी आय के एक भाग का उपयोग विजयनगर के दुर्गों के हितार्थ होता था। **मान्या** (कर-मुक्त) गांवों की आय का उपयोग ब्राह्मणों, मंदिरों और मठों की देख-भाल हेतु होता था। सबसे बड़ा वर्ग **आमरा** गांवों का था, जिन्हें विजयनगर शासकों द्वारा **अमरनायकों** को प्रदत्त किया जाता था। **आमरा** गांवों की भूमि पर **अमरनायकों** का मालिकाना हक नहीं होता था, परंतु इससे होने वाली आय पर उनका विशेषाधिकार था। आमरा काश्तकारी (**पट्टेदारी**) इस अर्थ में मुख्यतया अवशिष्ट संपत्ति थी कि इसमें से ब्राह्मणों और दुर्गों के लिए कटौती करने के पश्चात इसका वितरण होता था। सभी गावों का

तीन-चौथाई हिस्सा इस वर्ग में आता था। अधिकांश इतिहासकार अमरमकनी शब्द का अर्थ ''जागीर'' अथवा ''भूसम्पत्ति'' बताते हैं, लेकिन इसका शाब्दिक अर्थ 1/16वां हिस्सा (**मकनी**) है। इससे संकेत मिलता है कि **अमरनायक** गांव की आय के एक सीमित भाग पर ही दावा कर सकते थे। इस काल में **मान्या** अधिकारों में भी परिवर्तन हुए। राज्य द्वारा भूमि की पट्टेदारी व्यक्तिगत रूप से, **(एकाभोगन)** ब्राह्मणों और ब्राह्मणों के समूहों, साथ ही मठों जिसमें गैर-ब्राह्मण शैव सिद्धान्ता और वैष्णव गुरू भी सम्मिलित थे, को दी जाती थी। परंतु राज्य द्वारा दिये जाने वाले अनुदानों में तुलनात्मक रूप से **देवदान** अनुदान (मंदिर को दिए जाने वाले अनुदान) में बहुत वृद्धि हुई।

भूमि कर के अतिरिक्त कई व्यावसायिक कर प्रचलित थे। ये दुकानदारों, खेतों में काम करने वाले कर्मचारियों, चरवाहों, धोबियों, कुम्हारों, संगीतकारों और जूते बनाने वालों पर लगाए जाते थे। संपत्ति कर का भी प्रावधान था। चराई और मकानों पर भी कर आरोपित किए गए। गांववासियों को गांव के अधिकारियों के भरण-पोषण हेतु भी भुगतान करना पड़ता था। इसके अलावा, **स्थल दायम, मार्गदायम** और **मनुला दायम** तीन मुख्य परिवहन शुल्क थे।

भूमि अधिकार की एक अन्य श्रेणी के अंतर्गत सिंचाई में पूँजी निवेश द्वारा आय प्राप्त की जाती थी। इसे तमिल क्षेत्र में **दसावन्दा** और आन्ध तथा कर्नाटक में **काट्टु-कोडगे** के नाम से जाना जाता था। सिंचाई संबंधित इस प्रकार की कृषि गतिविधियाँ अर्द्ध-शुष्क भागों में होती थीं जहां जलराशिकीय तथा स्थलाकृतिक लक्षण विकासात्मक कार्यों के लिए उपयुक्त होते थे। **दसावन्दा** और **काट्टु-कोडगे** इस तरह के विकास कार्य जैसे किसी तालाब या नहर का निर्माण करने वाले व्यक्ति द्वारा अर्जित अधिक उत्पादकता के भाग थे। आय पर यह अधिकार व्यक्तिगत और हस्तांतरण योग्य होता था। इस बढ़ी हुई उत्पादकता का एक भाग उस गांव के किसानों को जाता था, जहाँ विकास संबंधी कार्य किया जाता था।

27.5.2 मंदिरों की आर्थिक भूमिका

विजयनगर के काल में मंदिर महत्वपूर्ण भूस्वामी बने। सैकड़ों गांवों का अनुदान उन देवी-देवताओं को किया गया, जिनकी पूजा विशाल मंदिरों में होती थी। मंदिर-अधिकारी **देवदान** गांवों की व्यवस्था अनुदान के सही उपयोग के लिए करते थे। **देवदान** गांवों की आय से धार्मिक कर्मचारियों का पोषण होता था। इसका उपयोग आनुष्ठानिक कृत्यों हेतु खाद्य चढ़ावा या अन्य सामग्रियों (अधिकतर सुगंधित वस्तुओं और वस्त्रों) की खरीद हेतु किया जाता था। राज्य द्वारा मंदिरों को आनुष्ठानिक प्रयोजनों हेतु नकद धर्मदान भी दिए जाते थे।

मंदिरों द्वारा सिंचाई-संबंधी कार्य भी किया जाता था। **देवदान** भूमि प्राप्त बड़े मंदिरों में एक सिंचाई विभाग होता था, जिसका कार्य मंदिरों को प्राप्त मुद्रा-अनुदानों का समुचित उपयोग करना था। मंदिरों को नकद अनुदान देने वालों को परिवर्द्धित उत्पादन क्षमता से प्राप्त खाद्य भेंट (**प्रसादम्**) का एक भाग प्राप्त होता था।

वास्तव में, मंदिर दक्षिण भारत की आर्थिक गतिविधियों के मुख्य केन्द्र थे। वे केवल विशाल भूस्वामी ही नहीं थे, बल्कि बैंकिंग गतिविधियों में भी संलग्न थे। उन्होंने कई लोगों को रोज़गार दिया। महालिंगम एक अभिलेख का उल्लेख करते हैं जिसमें एक मंदिर में 370 सेवकों के होने का वर्णन है। आनुष्ठानिक सेवाओं के लिए मंदिर स्थानीय साज-सामान खरीदते थे। आर्थिक प्रयोजनों के लिए वे व्यक्तियों और ग्राम्य सभाओं को ऋण प्रदान करते थे। ये ऋण भूमि के बदले में दिए जाते थे, जिसकी आय मंदिरों को प्राप्त होती थी। तिरुपति मंदिर को राज्य से प्राप्त नकद धर्मदानों का पुनः सिंचाई कार्यों में उपयोग होता था। इसके फलस्वरूप प्राप्त आय का प्रयोग धार्मिक कार्यों के लिए किया जाता था। श्रीरंगम मंदिर में नकद अनुदानों का प्रयोग त्रिचनापल्ली के व्यवसाय संघों को व्यावसायिक ऋण प्रदान करने में किया जाता था। मंदिरों के अपने व्यापार संघ होते थे, जो अपनी निधि का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए करते थे। इस प्रकार, मंदिर लगभग एक स्वतंत्र आर्थिक व्यवस्था के रूप में कार्य करते थे जिसमें व्यक्ति और संस्थाएं आर्थिक संबंधों द्वारा बंधे हुए थे।

27.5.3 विदेशी व्यापार

विदेशी व्यापार संबंधी जानकारी हमें कृष्णदेव राय के **अमुक्तामाल्यदा**, डोमेन्गो पाएस और नूनिज़ द्वारा प्राप्त होती है। उनमें अश्व-व्यापार का रोचक वर्णन मिलता है। भारतीयों की भूमिका विदेशी व्यापार में न्यूनतम थी। बारबोसा के अनुसार, भारतीय समुद्री व्यापार पर मुस्लिम सौदागरों का पूर्ण नियंत्रण था। शासकों द्वारा उनके साथ अच्छा बर्ताव किया जाता था। उसके अनुसार लाल सागर से लौटने पर सम्राट उन्हें स्थानीय लेन-देन में सहायता हेतु

एक **नायर** अंगरक्षक, **चेट्टी** लेखाकार और एक दलाल प्रदान करता था। उनकी प्रतिष्ठा इतनी थी कि कायल में, मुक्ता मात्स्यकी (मोती ढूंढने संबंधी कार्य) पर सम्राट के एकाधिकार को भी एक मुस्लिम सौदागर को दे दिया गया। अश्व-व्यापार पर अरबों और बाद में पुर्तगालियों का नियंत्रण था। घोड़ों को अरब, सीरिया और तुर्की के पश्चिमी सामुद्रिक बंदरगाहों पर लाया जाता था। गोवा द्वारा विजयनगर और साथ-ही दक्खनी सल्तनतों को घोड़ों की आपूर्ति की जाती थी। सैन्य दृष्टि से दक्षिणी राज्यों के लिए घोड़ों की बहुत महत्ता थी क्योंकि भारत में अच्छी नस्ल के घोड़े प्रजनित नहीं होते थे। इसके अलावा, विजयनगर के उत्तरी दक्खनी मुस्लिम राज्यों के साथ संघर्ष ने मध्य एशिया से आयातित घोड़ों की उत्तरी भारत द्वारा आपूर्ति पर अंकुश लगा दिया था। घोड़ों के अलावा, हाथी-दांत, मोती, मसाले, मूल्यवान पत्थर, नारियल, ताड़-गुड़, नमक इत्यादि भी आयातित किए जाते थे। मोती फारस की खाड़ी और लंका तथा मूल्यवान पत्थर पेगु से मंगाए जाते थे। मक्का से मखमल और चीन से साटन, रेशमी, जरीदार एवं बूटेदार कपड़ा आयात किया जाता था। सफेद चावल, गन्ना (ताड़-गुड़ से भिन्न) और लोहे का मुख्यतया निर्यात किया जाता था। विजयनगर से हीरों का आयात होता था। नूनिज़ वर्णन करता है कि इसकी हीरों की खानें विश्व में सबसे बड़ी थीं। मुख्य खानें कृष्णा नदी के तट पर और कुरनूल तथा अनन्तपुर में थीं। इसके फलस्वरूप, विजयनगर और मलाबार में हीरा, नीलम और माणिक जैसे बहुमूल्य पत्थरों को काटने और परिष्कृत करने के बड़े उद्योगों का विकास हुआ।

27.5.4 आंतरिक व्यापार और नगरीय जीवन

समकालीन विदेशी वृतांत प्रदर्शित करते हैं कि विजयनगर शासकों के काल में स्थानीय लंबी दूरी के व्यापार में वृद्धि हुई। नगरों के मध्य यात्रियों के लिए रास्ते और उनसे संबंधित सुविधाएं श्रेष्ठ थीं। कम दूरी तक खाद्यान्नों के परिवहन हेतु गाड़ियों का प्रयोग किया जाता था। नदी तटीय नौपरिवहन विशेषतः पश्चिमी तट पर अप्रवाही जल-व्यवस्था का भी संदर्भ मिलता है। लंबी दूरी के परिवहन हेतु भारवाही पशुओं का इस्तेमाल होता था। कुछ स्थानों में लंबे मार्गों के परिवहन में सुरक्षा हेतु सशस्त्र रक्षकों का उपयोग किया जाता था। प्रभावशाली स्थानीय व्यक्तियों ने व्यापार की महत्ता समझते हुए नगर-आधारित व्यापार और पूरक व्यापार को नियमित और नियतकालिक मेलों में प्रोत्साहन दिया। उत्सव के समय मंदिरों की ओर जाने वाले मुख्य मार्गों पर नियमित और नियतकालिक मेलों का आयोजन होता था। इन मेलों का आयोजन समीप के कस्बों के व्यापार-संघों द्वारा किया जाता था और इनकी देखभाल व्यापार-संघ के अध्यक्ष द्वारा की जाती थी जिसे **पट्टनस्वामी** कहते थे। स्थानीय प्रभावशाली लोगों, जैसे **गौडा** या **नाडु** के मुखिया के आदेशों पर नगरीय व्यापार को बढ़ावा देने हेतु मेलों का आयोजन होता था। 14वीं से 16वीं शताब्दियों के मध्य के साहित्यिक और अभिलेखीय प्रमाण 80 प्रमुख व्यापारिक केन्द्रों के अस्तित्व को प्रकट करते हैं। कुछ नगर धार्मिक होते थे तो अन्य व्यापारिक और प्रशासनिक केन्द्र होते थे। इन नगरों में कई बाज़ार होते थे, जिनमें व्यापारियों द्वारा व्यवसाय किया जाता था। वे नगरों को किराया अदा करते थे। विशेष वस्तुओं के बाज़ार भी पृथक होते थे। कृषि संबंधी और गैर-कृषि संबंधी उत्पादों के बाज़ार बायें और दायें हाथ के जाति संबंधों के अनुरूप अलग-अलग होते थे। तीर्थयात्रियों के लिए पवित्र आहार का व्यवसाय और आनुष्ठानिक कार्यों और पदों के अधिकार की खरीद मंदिर-संबंधित नगरीय-व्यापार के महत्वपूर्ण अंग थे।

आन्ध्र के व्यापारियों और शिल्पकारों के संगठनों ने किसी विशेष नगर से घनिष्ठ संबंध बनाए, जैसे तेलुगु के तेलियों और व्यापारियों ने बेरवाडा (कृष्णा ज़िले में) शहर से संबंध स्थापित किए। इन नगरों की आय, परिवहन शुल्क दुकानों और घरों के किराए से होती थी। मंदिर-दस्तावेज़ व्यापारियों और शिल्पकारों की संपन्नता और प्रतिष्ठा का वर्णन करते हैं। विजयनगर राज्य में एक ऐसी नगरीय-विशेषता थी, जो उस युग के किसी अन्य दक्षिण भारत के राज्य में नहीं थी। राजधानी-शहर अपने परिवेश में बाज़ारों, महलों, मंदिरों, मस्जिदों इत्यादि को अंगीभूत किए हुए था। तथापि यह नगरीय-विशिष्टता 16वीं शताब्दी के मध्य तक पूर्ण रूप से नष्ट हो गई।

27.6 सामाजिक व्यवस्था

विजयनगर साम्राज्य के दक्षिण भारतीय वृहत्तर भाग में सामाजिक संरचना भारतीय समाज की आम संरचना से भिन्न है। सामाजिक संरचना की यह विलक्षणता तीन तरह से थी:

- दक्षिण भारतीय ब्राह्मणों की धर्म-निरपेक्ष भूमिका,
- निचले सामाजिक समूहों में दोहरा विभाजन, और
- समाज का क्षेत्रीय खंडीकरण।

ब्राह्मण जिन स्थानों पर रहते थे, वहाँ भूमि पर उनका नियंत्रण था, एवं उनकी प्रतिष्ठा और शक्ति भी भूमि पर आश्रित लोगों के नियंत्रण से थी। पुजारी वर्ग की हैसियत से पवित्र कार्यों के कारण भी उन्हें प्रतिष्ठा प्राप्त थी। असंख्य वैदिक मंदिरों के आविर्भाव से, जिन्हें गांवों (**देवदान**) का धर्मदान प्राप्त था, ब्राह्मणों को मंदिर-अधिकारियों के रूप में इतनी शक्ति प्राप्त हुई कि उनका अन्य जातियों और धार्मिक संस्थाओं पर धर्म-विध्यात्मक नियंत्रण हो गया। इन धार्मिक केन्द्रों के व्यवस्थापकों की हैसियत से ब्राह्मणों को बहुत अधिक धर्म-निरपेक्ष अधिकार प्राप्त थे।

क्षेत्रीय खंडीकरण का तात्पर्य यह है कि तमिल प्रदेश में सामाजिक समुदायों का, प्राकृतिक उप-क्षेत्र और उससे संबंधित व्यावसायिक ढाँचे के आधार पर, विभाजन था। दक्षिण भारत के सामाजिक समुदायों का अपने स्थान से दूर स्थित समुदायों से कम संबंध था। वे भाई-बहिन और मामा-भांजी विवाह को वरीयता देते थे।

सामाजिक संरचना की एक और विशिष्टता निचली जातियों का दोहरा विभाजन था, जो बाएं और दाएं हाथ परिकल्पना से संबंध रखता था (दाएं हाथ विभाजन के अनुरूप वैष्णव और बाएं हाथ की जातियां शैव होती थीं)। अधिकतर दाएं हाथ की जातियां कृषि उत्पादन तथा कृषिय उत्पादों में स्थानीय व्यापार में संलग्न थीं। बाएं हाथ की जातियां गैर-कृषि उत्पादों में व्यापार तथा चल-शिल्प उत्पादन में संलग्न थीं।

विजयनगर युग में किसान सामाजिक व्यवस्था का आधार था, जिसपर समाज के सभी अन्य वर्ग निर्भर थे। तमिल काव्य शैली, **सत्काम** मुख्य कृषक वर्ग को विशुद्ध **सत-शूद्र** मानती थी। उन्होंने अपने लिए आनुष्ठानिक पवित्रता और आदरणीय धर्म-निरपेक्ष दर्जा प्राप्त किया।

मंदिर किसी विशेष देवता की पूजा करने वाले वर्गों के सामाजिक अंतरण की रूपरेखा या निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। दक्षिण भारतीय राजशाही में वंश-परंपरा की एक प्रमुख विशेषता वंश-देवता की सामूहिक भक्ति थी। किसानों के देवताओं के तीर्थों (जैसे **अम्मान**) के गैर-ब्राह्मण पुजारी ब्राह्मण प्रभुत्व के विशाल शिव और विष्णु तीर्थ-स्थानों की व्यवस्था में भी भाग लेते थे। विशाल तीर्थ-स्थलों पर स्थित संप्रदायी संगठन के अधिष्ठानों (मठों) में ब्राह्मण, गैर-ब्राह्मण परंपरा दोनों के व्यक्ति होते थे। इस प्रकार, इस युग के सामाजिक संगठन में ब्राह्मण, बाएं हाथ और दाएं हाथ की जातियां (जिनमें आदर योग्य कृषि-जातियां **वेल्लाल** और बुनकरों जैसी कमज़ोर जातियां आती थीं) सम्मिलित थीं।

बोध प्रश्न 3

1) विजयनगर साम्राज्य में भू-पट्टेदारी की प्रकृति पर एक टिप्पणी कीजिए।

....

....

....

....

2) विजयनगर शासकों के काल में विदेशी व्यापार के विशेष संदर्भ सहित वाणिज्य और व्यापार की प्रगति का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

3) दाएं हाथ और बाएं हाथ जातियों को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

....

....

27.7 सारांश

विजयनगर राज्य का अध्ययन प्रदर्शित करता है कि:

- मुख्य संघर्ष विजयनगर और बहमनियों के मध्य था,
- इस संघर्ष के केन्द्र कृष्णा-गोदावरी डेल्टा, कावेरी-घाटी, तुंगभद्रा दोआब और कोंकण प्रदेश थे,
- विजयनगर राजशाही बाहरी भागों में प्रतीकात्मक थी, जिसमें शासक अपने अधिपतियों के द्वारा नियंत्रण रखते थे,
- ब्राह्मण धार्मिक मुखियाओं से अधिक राजनीतिक और धर्म-निरपेक्ष कर्मचारी थे,
- विजयनगर शक्ति का आधार उसकी दो प्रमुख राजनीतिक संस्थाएं **नायनकार** और **आयगार** थीं,
- मंदिर न केवल धार्मिक केन्द्र अपितु आर्थिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण केन्द्र भी थे: वे बैंकिंग और सिंचाई के कार्यों का निर्वाहन करते थे,
- वाणिज्य और व्यापार उन्नत अवस्था में था। किंतु, भारतीय व्यापारियों की विदेशी (समुद्री) व्यापार में भूमिका नगण्य थी, जबकि मुस्लिम सौदागरों का इस पर एकाधिकार था।

27.8 शब्दावली

आमरा : स्थानीय सेनानायकों को प्रदत्त गांव

भंडारावाडा : गांव की शाही भूमि

देवदान : मंदिरों को प्राप्त गांव

दसावन्दा और कट्टू-कोडगे : सिंचाई-निवेश से प्राप्त आय

मान्या : गांव स्तर के अधिकारियों को दी जाने वाली कर-मुक्त भूमि

नाडु : देखें खंड 3

सभा : देखें खंड 3

उर : देखें खंड 3

27.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें उपभाग 27.2.1
2) देखें उपभाग 27.2.2, 27.2.4
3) देखें उपभाग 27.2.6

बोध प्रश्न 2

1) देखें उपभाग 27.3.2
2) देखें उपभाग 27.3.2, 27.4.2
3) देखें उपभाग 27.4.1

बोध प्रश्न 3

1) देखें उपभाग 27.5.1
2) देखें उपभाग 27.5.3, 27.5.4
3) देखें भाग 27.6